ISSN:2395-1079

Available online at http://www.Sajms.edwin.co.in

South Asia Journal of Multidisciplinary Studies SAJMS January 2021, Vol.0q 6, No 12

स्वप्न –विज्ञान दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

प्रोफेसर (डॉ.) उषा खंडेलवाल

विभागाध्याक्ष - दर्शनशास्त्र, डीन-योग एंड नेचुरोपैथी

एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.)

जो यथार्थ नहीं है, उसे यथार्थ की भांति प्रत्यक्ष देखने का नाम' **स्वप्न**' है। स्वप्न ए कमनोमय अनुभूति है ,उसका कोई निश्चित कारण भी नहीं, क्योंकि आज तक कोई भी वैज्ञानिक निश्चित रूप से यह नहीं बता सका है कि किस स्वप्न का क्या कारण है ? स्वप्न आत्म चेतना की अनुभूति मात्र है, जो यह प्रमाणित करता है कि जीवात्मा अपना आत्म- विकास करने मन के महत्व को समझें।इस प्रकार मन का संबंध, ब्रह्मांड के रहस्यों के साथजोड़ कर उसे व्यापक बनाया जा सकता है।" गायत्री उपासनाया योग – साधनाओ सेना ड़ी शोधन क्रिया होती है, शुद्ध हुई सुषुम्ना नाड़ी में मन का प्रभावित होना ही दिव्य स्वप्न दिखाता है। उस समय विराट परिसर में हमारी चेतना तैरती है, जिससे दिव्य आकृतियां, ग्रह ,नक्षत्र ,पर्वत, नदी ,हरे – भरे स्थान दिखाई देते हैं।

फ्रायड,**जुंग** आदि मनोवैज्ञानिकों ने स्वप्न विश्लेषण विभिन्न तरह से किया है। **आचार्य श्री राम शर्मा** ने भी अपनी तरह से स्वप्नों की व्याख्या की है। उनका कहना है कि जिस प्रकार हमारा स्थूल जीवनअनेक प्रकार के ज्ञान – विज्ञान से ओत-प्रोत है, उसी प्रकार सूक्ष्म जीव भी सूक्ष्म शरीर संस्थान के रूप में अनेक रहस्यों से ओत-प्रोत हैं। स्वप्न काल की व्याख्या करते हुए वे कहते हैं " स्वप्न का संबंध काल की सीमा से परे है अतीं द्रिय जगत से है अर्थात अनादि काल से चले आ रहे एवं भूतकाल से लेकर अनंत काल तक चलने वाले भविष्य जिस अतीं द्रिय चेतना में सन्निहित है, मानवीय चेतना स्वप्न काल मैं उसका स्पर्श करने लगती **है**।" वे यह भी मानते हैं कि स्वप्न का संसार भी स्थूल जीवनके सदृश्य जटिल है अन्तर्जगत की अनेक समस्याएं इनके माध्यम से सुलझाई जाती हैं। स्वप्न में काल का बंधन नहीं होता, अतःस्वप्न में 1 से कंड में ही लंबे दृश्य देखना संभव है।

इस प्रकार **आचार्य श्रीराम शर्मा** स्वप्नों की सार्थकता में योग – साधनाओं का सहयोग मानते हैं। उन्होंने कई पुस्तकों में लिखा है कि साधकों के स्वप्न सत्य होते हैं।इस प्रकार स्वप्नों के संदर्भ में अन्यपत्रिकाओं में भी उदाहरण मिलते हैं जिसमें स्वप्न के कारण भिन्न-भिन्न बताए गए हैं।

स्वप्न के कुछ विद्वानों ने निम्नलिखित कारण बताए हैं:

१. **नैतिक उत्तेजना :** कुछ स्वप्न नैतिक उत्तेजना के कारण होते हैं। जैसे – सोते हुए व्यक्ति के समीप जल रखा जाए ,तो उसे सामान्य जल में तैरने इत्यादि के सपने आते हैं।

२. **आंतरिकउत्तेजना** : कभी निद्रा वस्था में प्यास लगने के कारण भी नदियों इत्यादि के सपनेआते हैं। श्वांस तीव्रगति से चलने के कारण आकाश के सपने आते हैं।

३. निद्रा के पूर्व के विचार एवं भाव भी स्वप्न का कारण होते हैं।

४. बहुत से स्वप्न व्यक्ति के चरित्र एवं स्वभाव पर भी निर्भर करतेहैं।कंजूस स्वभाव का व्यक्ति प्राय: यही स्वप्न देखता है कि उसे बहुत संपत्ति प्राप्त हो गई है।

इस तरह विभिन्न विद्वानों ने अपने -अपने ढंग से स्वप्नों की व्याख्या की है। परंतु **फ्रायड** ,**जुंग**आदिमनो वैज्ञानिकों ने स्वप्न की मनोवैज्ञानिक व्याख्या की है, जो इस प्रकार है- **फ्रायड** ने स्वप्नसिद्धांतानुसार स्वप्नों का कारण व्यक्ति की अतृप्त दबी हुई इच्छायें हैं । बालकों के स्वप्न में ये इच्छाए स्पष्टरूप में प्रकट होती हैं , किंतु प्रौढ़ व्यक्तियों के स्वप्न में ये स्पष्टरूप से प्रकट नहीं होती है। उनका कथन है कि छोटे छोटेबालकों की इच्छाएं पूर्ण तया पवित्र एवं नैतिक होती हैं, यदि जागृता वस्था में इसकी पूर्ति नहीं होती है, तो स्वप्ना वस्था में उनकी इच्छाओं की पूर्ति उसी रूप में हो जाती है। यदि कोई छोटा बच्चा किसी कारण सेअपनी मिठाई की इच्छा तृप्त नहीं कर सकता है, तो वह स्वप्न में मिठाई खाकर पूर्ति करता है। वे यह भी कहते हैं कि "बच्चे का स्वप्न पिछले दिन के अनुभव की एक प्रतिक्रिया है।अनुभव कोई अफसोस, कोई चाह, या कोई अपूर्ण इच्छा पीछे छोड़ गया है, तो स्वप्न इसी इच्छा की सीधी या प्रत्यक्ष रूप से पूर्ति करते हैं। " इस प्रकार **फ्रायड** की ये बातें सर्व था निराधार तो नहीं है।मानसिक कल्पनाएं भी अपना महत्व रखती हैं, परंतु स्वप्नों का संपूर्ण क्षेत्र यहीं तक सीमित नहीं है। वस्तुतः यह सीमा तो मनोविज्ञान की है।

आचार्य श्रीराम शर्मा मानते हैं कि " जो लोग मनकी दौड़ व्यक्ति केशरीर से जुड़े तथा परिचित संसार तक ही मानते हैं, अव चेतन मन को भी एक सीमित परिवेशत कही मानेंगे। जबकि मन इतनी दूर तक जा सकता है तथा वह अनुभव कर सकता है, जिसे स्थूल शरीर ने न देखा है, ना सुना है।" मनो वैज्ञानिकों ने यह भी माना है कि अवचेतन मन सूक्ष्मातिसूक्ष्म बातों को पकड़ सकता है, जिसकी चेतन मन को जानकारी तक नहीं है। हमारा स्वयंभी यह अनुभव है कि कभी-कभी ऐसे स्वप्नआते हैं, जिनकी पुष्टि समय के अंतराल के पश्चात होती है, इससे यह सिद्ध होता है किमन की पकड़ अत्यंत ही सूक्ष्म है।

'**फ्रायड**' ने स्वप्न को जन्म देने वाले अवचेतन पहलू को **अव्यक्त घटक** (Latent Content) तथा स्वप्न में चेतन पहलू को **व्यक्त घटक** (Manifest Content) कहा है। इस प्रकार उन्होंने अवचेतन को पूर्णत: मानसिक प्रक्रम ही माना है। **आचार्य श्रीराम शर्मा** यह मानते हैं कि मनुष्य के मन का 88% भागअव चेतन होता है तथा मात्र 12% भाग चेतन होता है। चेतन मन भी पूर्ण चेतना के समान क्रियाशील नहीं होता है, अतः अव चेतन का ज्ञान अत्यंत ही कठिन है, जब कितना वमुक्त करने में अवचेतन मन ही प्रमुख है।" चेतन मस्तिष्क परलगने वाले बौद्धिक – संवेदनात्मक आघातों के लि गहरी निद्राऔर स्वप्न श्रंखला मरहमका कार्य करती हैं, क्योंकि स्वप्नों में अव चेतन मन ही क्रियाशील होकर, चेतन मन को विश्राम प्रदान करता है| पूर्ण विश्राम के पश्चात चेतन मस्तिष्क पुनः स्फूर्ति वान हो जाता है।" इस प्रकार स्वप्नअव चेतन मस्तिष्क की स्थिति है।

आचार्यश्रीराम शर्मा के उपर्युक्त विचार **सिंगमंड फ्रायड एवं कार्लजुगं**के विचारों से प्रभावित प्रतीत होते हैं। **फ्रायड** के अनुसार" मानव व्यक्तित्व के कई स्तरों में तीन स्तर प्रमुख है- **इड** (ID), **ईगो** (EGO), एवं**सुपरईगो** (Super EGO)**।**"

" **इड** ,मानव व्यक्तित्व का सबसे गंभीरस्तर माना गयाहै। **कार्लजुगं** के मतानुसार भी मानव व्यक्तिका अव चेतन मन अत्यधिक गहरा है।उनकेअनुसार"व्यक्तिकेअवशेषत नमन में, ना केवल उस केअपने जीवन के अनुभव होतेहैं, अपितु उसकेपूर्वजों केअनुभवभी संचित रहते हैं ।"

इसी तरह **फ्रायड** ने चेतन (Unconscious) शब्द का अर्थ बताया है- अज्ञात अर्थात जो स्वयं कोया अपने बारे में नहीं जानता। वह कहते हैं कि " स्वप्न किसीऔर चीज का , किसी अज्ञातयाअवचेतन वस्तु का ,विर्पयस्त अर्थात बिगड़ा हुआ स्थानापन्न है और स्वप्न का अर्थ लगाने में हमें इनअ चेतनया अज्ञात विचारों को खोजना है।" **कार्लजुगं** ने तो अचेतन मन के दो स्तर माने हैं, प्रथम, व्यक्तिगतअचेतन एवं द्वितीय, जातिगत अचेतन। उनके स्व प्नसिद्धांतानुसार, स्वप्न वर्तमान मानसिक परिस्थिति तथा उसकी आवश्यकताओं के सूचक होते हैं | हमारे सभी स्वप्न आदेशात्मक (Perofectic) होतेहैं। उनका कथन है कि " स्वप्नों द्वारा हमें अपनी मानसिक स्थिति का पूर्ण ज्ञान होता है।यदि कोई आदमी स्वप्न में कि सीसवारी अथवा ऊंचे स्थान से गिरजाता है। उसका आशय है कि वह वर्तमान मेंअवनति के मार्ग परजा रहा है। अतःउसे सतर्कता का जीवन यापन करने कीआवश्यकता है।" **एडलर** की भी मान्यता है कि स्वप्न मात्र वर्तमान स्थिति को ही सूचित नहीं करते अपितु भविष्य की स्थिति का भी संकेत करते हैं।

फ्रायड ने अचेतनमन की व्याख्या करते हुए कहा है कि जागृता वस्था में व्यक्ति जो इच्छाएं करते हैं, उन सबकी पूर्ति नहीं होती है, जो इच्छाएं नैतिक एवं सामाजिक होती हैं, वही पूर्ण होती हैं।किंतु अनैतिक वअ सामाजिक इच्छाएं अतृप्त रह जाती हैं। यह अतृप्त इच्छाएं काल क्रम में विलीन हो जाती है, क्योंकि उस समय, चेतन मन के स्थल होने के कारण उस पर प्रतिबंध नहीं रहता है। वस्तुतः" स्वप्नों की व्याख्या से हमारे अचेतन मन की सत्ता प्रमाणित होती है।"

इस प्रकार स्वप्नों कान दिखना भी अस्वस्थ ताकी निशानी है| जब शरीर की समस्त नाड़ियाँ अपनी अंत: प्रक्रिया सूक्ष्म जानकारी मस्तिष्क को देना बंद कर देती है, तभी स्वप्न दिखाई देना बंद होते हैं, अतः निद्रामात्र शारीरिक विश्राम ही नहीं वरन कुछ और भीहै| स्वप्न मात्र मनोवैज्ञानिक हल चल ही नहीं वरणतथ्यपूर्ण संकेत भी हैं| मन आत्मा की सूक्ष्म ज्ञानेंद्रिय है, जो भूतकाल एवं भविष्य की ज्ञात- अज्ञात घटना ओं को प्रकट करने में सहायक है| स्वप्न की सार्थकता मन की पवित्रता, प्रखरता एवं परिष्कृत मनो भूमि पर निर्भर करती है |

1. आचार्य श्री राम शर्मा,सपने झूठे भी सच्चे भी, पृष्ठ-7
2. पूर्ववत
3. फ्रायड मनो विश्लेषण,'एजनरल इंट्रोडक्शन टूसाइकोनेलसिसं' के अनुवादक देवेंद्र कुमार वेदलंकार, पृष्ठ107
4. आचार्य श्री राम शर्मा,सपने झूठे भी सच्चे भीपृष्ठ-40
5. पूर्ववत
6. Freud,S,Outline of psychoanalysis, international journal of psychoanalysis,1960,P.5
7. Jung C, G., The Integrations of personality 1946, page 52.
8. फ्रायडमनोविश्लेषण,'एजनरल इंट्रोडक्शन टूसाइकोनेलसिसं' के अनुवादक – देवेंद्र कुमार वेद लंकार, पृष्ठ- 394
9. Jung,C,Modern Man In Search of a Soul,P.17
10. जगानंद पांडे, मनोविज्ञान, पृष्ठ-53

ISSN:2395-1079

Available online at http://www.Sajms.edwin.co.in

South Asia Journal of Multidisciplinary Studies SAJMS January 2021, Vol.0q 6, No 12